Date -> 16.11.2017 (JHARKHAND JAGRAN)

अध्यात्म हमारे देश की आत्मा: कोविंद

संवाददाता

रांची: योगदा सत्संग सोसाइटी ऑफ इंडिया के द्वारा पूरे विश्व में निरंतर योगदान के सौ वर्ष पूरे होने पर मैं इस सोसाइटी, और परमहंस योगानन्द के विचारों से जुड़े प्रत्येक व्यक्ति को बधाई देता हूँ। इन सौ वर्षों में योगदा सत्संग सोसाइटी ने पूरे विश्व में भारत के योग विज्ञान को प्रसारित करने में सराहनीय योगदान दिया है। इस शताब्दी वर्ष में, गीता पर परमहंस जी की टीका के हिन्दी अनुवाद का प्रकाशन समयानुकूल है और उपयोगी भी। सन 1995 में मूल अँग्रेजी टीका का प्रकाशन हुआ था। अब तक स्पैनिश, जर्मन, इटालियन और पुर्तगाली भाषाओं में अनुवाद उपलब्ध थे। आज इस हिन्दी अनुवाद के प्रकाशन द्वारा एक बहुत बड़े पाठक वर्ग के लिए इस पुस्तक में निहित जीवनोपयोगी ज्ञान सुलभ हो गया है। इस अनुवाद के लिए स्वामी नित्यानन्द जी प्रशंसा के पात्र हैं।उक्त बातें भारत के राष्ट्रपति राम नाथ कोविंद ने परमहंस योगानन्द की पुस्तक के हिन्दी अनुवाद के विमोचन के अवसर पर कही। उन्होने कहा कि अध्यात्म हमारे देश की आत्मा है जो पूरे विश्व के लिए भारत की एक महत्वपूर्ण देन है। विश्वस्तर पर भारत के अध्यात्म को सम्मानित और लोकप्रिय बनाने का मार्ग स्वामी विवेकानंद और परमहंस योगानन्द ने प्रशस्त किया था। एक रोचक ऐतिहासिक संयोग स वर्ष 1893 में स्वामी विवेकानंद के शिकागो सम्बोधन ने भारतीय अध्यात्म के बारे में पश्चिम में जागृति की एक नई लहर पैदा की थी। और इसी वर्ष गोरखपुर में परमहंस योगानन्द का मुकुन्द लाल घोष के नाम से अवतरण हुआ था। परमहंस योगानन्द का संदेश अध्यात्म का संदेश है। वह धर्म से परे, सभी धर्मों का सम्मान करने का विश्व-बंधुत्व का नजरिया है। वे मानते थे कि जिस तरह रोशनी, हवा और पानी सबके लिए हैं। उसी तरह ऋषि-मुनियों द्वारा विकसित किया गया भारत का योग-विज्ञान भी पूरी मानवता के लिए है। गीता में भारत का यही योग शास्त्र श्री कृष्ण और अर्जुन के संवाद के रूप में समझाया गया है। श्री कोविंद ने कहा कि अपनी टीका में परमहंस योगानन्द ने गीता के मनोवैज्ञानिक और आध्यात्मिक पक्ष को स्पष्ट करते हुए मार्गदर्शन प्रदान किया है। हर मनुष्य के अंदर चलने वाले युद्ध को उन्होने गीता का विषय माना है। परमहंस योगानन्द के अनुसार गीता दैनिक जीवन के लिए एक पाठ्य-पुस्तक भी है। वे कहते है कि प्रत्येक व्यक्ति को कुरुक्षेत्र की अपनी लड़ाई स्वयं लड़नी है और इसे जीतना भी है। सही क्या है और गलत क्या है,क्या करें और क्या न करें, यह अंतर्द्वंद्व सबको परेशान करता है। ऐसे दोराहों पर निर्णय लेने में विद्वत्ता की नहीं बल्कि विवेक की आवश्यकता होती है। सही और गलत के बीच चुनाव करने का यह विवेक गीता में मिलता है। मेरा यह मानना है कि जो व्यक्ति गीता को अपने आचरण में ढालेगा वह झंझावात में भी, स्थिर रहेगा, शांत रहेगा और सक्रिय रहेगा।

झारखण्ड जागरण, 16 Nov 2017